समझा। इस प्रयास के तहत उसने एक 'धर्म विभाग' की स्थापना की। जो धर्म प्रचार के कार्य के लिए अधिकारियों की नियुक्ति करती थी। धार्मिक नीति की सफलता के लिए मुक्ती आदि अधिकारियों को जिम्मेवार ठहराया था। उसी तरह अशोक ने धर्म महामात्रों की नियुक्ति की थी। ये धर्म महामात्र साम्राज्य के विभिन्न भागों में भ्रमण कर धर्म प्रचार के कार्यों में सहायता प्रदान करते थे। वस्तुतः राजकीय संरक्षण ने बौद्ध धर्म को व्यापक स्तर पर प्रचलित होने में सहायता प्राप्त किया।

अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को समझने के लिए तृतीय बौद्ध सभा का आयोजन किया। मोग्गलिपुत्त तिस्स के सभापतित्व में इस सभा में संपूर्ण साम्राज्य के बौद्ध भिक्षु शामिल हुए थे, जो स्वयं में ऐतिहासिक था। इसके अतिरिक्त इसमें मगध साम्राज्य के बाहर के बौद्ध भिक्षुओं ने भाग लिया था। इस सभा के क्रम में अशोक ने महात्मा बुद्ध के उपदेशों की महत्ता का वर्णन कर अपनी नीति को उजागर किया। इसने बौद्ध भिक्षुओं को सुत्तपिटक, विनयपिटक आदि धर्म ग्रंथों का अध्ययन कर उनके मूल तत्वों को समझने की आवश्यकता के संबंध में थी, लेकिन इस प्रयास के कारण अब बौद्ध धर्म में एक नई चेतना का संचार हुआ। इस प्रकार मध्यकाल में जिस तरह भक्ति आंदोलन के कारण हिन्दू धर्म को एक नया बल प्राप्त हुआ था, उसी तरह बौद्ध धर्म में दृढ़ता आई। इस ऐतिहासिक बौद्ध सभा की सजीव जानकारी हमें अशोक के भाब्रु शिलालेख अभिलेख से प्राप्त होती है।

कॉन्सटेन्टाइन ने जिस तरह से ईसाई धर्म का विश्व स्तर पर प्रसारित करने का प्रयास किया था, उसी तरह अशोक ने भी अपने धर्म को

Scanned with CamScanner

विस्तृत करने का प्रयास किया। इसी क्रम में उसने अपने साम्राज्य के बाहर विदेशों में धर्म का प्रचार किया। इसके लिए उसने धर्म प्रचारकों एवं उपदेशकों से सहायता ली। महारक्षित, महाधर्मरक्षित, रक्षित आदि ऐसे धर्म प्रचारक थे जिन्होंने यूनान जैसे विभिन्न प्राचीन देशों की यात्राएं की। उसने ऐसे धर्म प्रचारकों को मिस्र, मकदूनिया, साइरीन आदि देशों में भेजा। उसने इन कार्यों के लिए राजपरिवार के सदस्यों को भी प्रोत्साहित किया। इस क्रम में उसने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को सिंहलद्वीप की ओर भेजा। उसके इन प्रयासों के परिणामस्वरूप लंका के राजा तिस्स एवं उसकी प्रजा बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था। इसकी जानकारी हमें 'महावंश' नामक ग्रंथ से मिलती है।

अशोक ने विदेशों में जो इन धार्मिक मिशनों को भेजा, उसका तात्पर्य सिर्फ धर्म प्रचार से ही नहीं था। इन मिशनों के साथ राज्य के विभिन्न अधिकारी भी रहते थे। जिनके द्वारा विभिन्न जगहों में लोक सेवा संबंधी कार्य किए जाते थे। इसके अतिरिक्त ये मिशन अपने साथ अपने देश की गरिमामयी सभ्यता एवं संस्कृति भी लेते गए, जिसका मुख्य उद्देश्य — असभ्य बर्बर जातियों को नई राह दिखलाना था। इस क्रम में लंका में राजकुमार महेन्द्र ने पत्थर पर नक्काशी करने की कला प्रचलित की। वस्तुतः ये प्रयास स्थानीय सम्प्रदाय को निज धर्म में परिवर्तित करने के लिए किए गए थे।

According to — "Budhiest Emperior of Indian" writen by V.A. Smith we find that these religious [illegible] first of its kinds because two hundred and last years ago Budhism was bounder under the valley of Ganges."